श्री कुन्थुनाथ विधान

रचयित्री - गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.469
ISBN-978-93-84003-80-7

श्री कुंथुनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर 108 फुट उत्तुंग विशालकाय भगवान ऋषभदेव की अन्तर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा माघ शु. तृतीया से दशमी तक (11 से 17 फरवरी 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2542, माघ शु. तृतीया	मूल्य
1100 प्रतियाँ	11 फरवरी 2016	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिय तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो ''एक पंथ दो काज'' वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में ''श्री कुंथुनाथ विधान'' नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के सत्रहवें तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ भगवान ने अपनी पावन रज से हस्तिनापुर नगरी को पवित्र किया है। पिता सूरसेन एवं माता श्रीकांता के आंगन में वैशाख सुदि एकम को प्रभु कुंथुनाथ का जन्म हुआ। इस ही तिथि में भगवान ने दीक्षा ग्रहण की। चैत्र सुदी तृतीया को भगवान को केवलज्ञान हुआ। भगवान कुंथुनाथ की ऊँचाई एक सौ चालिस हाथ एवं आयू पंचानवें हजार वर्ष की थी। भगवान का चिह्न बकरा एवं शरीर तपाये हुए स्वर्ण के सदृश अत्यन्त सुन्दर था। भगवान कुंथुनाथ तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव तीन पद के धारी थे। वैशाख सुदी एकम् को भगवान श्री कुंथुनाथ ने सम्मेदशिखर पर्वत से मोक्षधाम को प्राप्त किया।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्र-चन्द्रिका, दिव्यशक्ति, आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चौबीस तीर्थंकरों के विधानों की शृंखला में यह तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ विधान रचकर प्रदान किया है। यह विधान भी अत्यन्त चमत्कारिक विधान है।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है। उसके बाद में अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा के बाद श्री कुंथुनाथ तीर्थंकर की पूजा एवं उनके पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद भगवान के 108 गुणों के 108 अर्घ्य मंत्र सहित हैं। यद्यपि भगवान के तो गुण अनन्त हैं फिर भी यहाँ पर पूज्य माताजी ने 108 मंत्रों को लेकर अर्घ्य दिए हैं जैसे–

नाथ ! 'अशोक' शोक से हीन।
आप भक्त हों शोक विहीन।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।

इसी तरह से महाशोकध्वज, स्रष्टा, पद्मविष्टर, पद्मेश, पद्मसंभूति, पद्मनाभि, अनुत्तर, पद्मयोनि, जगद्योनि आदि 108 नामों का उल्लेख करते हुए 108 मंत्र के 108 अर्घ्य हैं। फिर 108 बार जाप्य मंत्र के बाद जयमाला है। जयमाला में भगवान के समवसरण में पैंतिस गणधर, साठ हजार मुनि, गणिनी भाविता

आर्यिका सहित साठ हजार तीन सौ पचास आर्यिकाएँ, दो लाख श्रावक, तीन लाख श्राविकाएँ आदि का सुन्दर वर्णन है। चौबीसों तीर्थंकरों के समवसरण में आर्यिकाओं एवं श्राविकाओं की संख्या ज्यादा रही है।

इस जयमाला में चारों गतियों का एवं पंच परावर्तन का, बहिरात्मा, अंतरात्मा एवं परमात्मा का भी सुन्दर वर्णन है। इस जयमाला के अंत में पूज्य माताजी ने बहुत सुन्दर भावना भाई है—

हे नाथ ! बहिरात्मा दशा को, छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूँ।
निज के अंनतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूँ।।

अर्थात् बहिरात्म अवस्था को छोड़कर अन्तरात्मा बनकर एक दिन में भी परमात्मा बनकर संसार को छोड़कर तीन लोक के शिखर पर जाकर निवास करूँ।

जयमाला के बाद विधान की प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ की पूजा है। इसके बाद मेरे द्वारा रचित श्री कुंथुनाथ भगवान की, हस्तिनापुर तीर्थ की मंगल आरती एवं भजन हैं।

इस विधान में कुल पूजा 3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य-1 एवं 3 जयमालाएँ हैं। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्रदान करावे, यही जिनेन्द्र देव से मंगल प्रार्थना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यैः शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनके उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर का शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री अर्हंत पूजा	3
3.	श्री कुंथुनाथ तीर्थंकर पूजा	8
4.	अथ 108 अर्घ्य	11
5.	जयमाला	28
6.	प्रशस्ति	30
7.	श्री कुंथुनाथ जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ पूजा	31
8.	भगवान श्री कुंथुनाथ की आरती	35
9.	हस्तिनापुर तीर्थ की आरती	37
10.	भजन–विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा.....	38
11.	भजन–सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा.....	39
12.	भजन–नाम तिहारा तारन हारा.....	40

मण्डल विधान का नक्शा

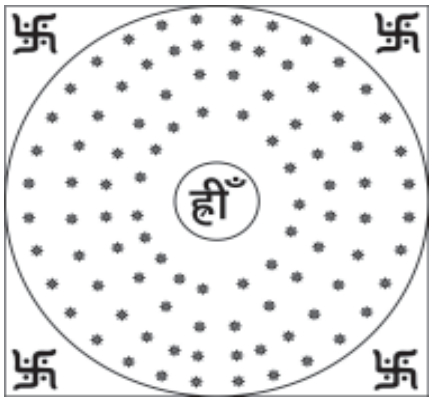

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

श्री कुंथुनाथ विधान

मंगलाचरण

–उपेंद्रवज्राछंद–

संसारवार्धौ विनिमग्नजंतून्, उद्धृत्य यो मोक्षपदे धरन् हि।
कृपापरस्तं प्रभुकुंथुनाथं, नमामि भक्त्या परया मुदा च।।1।।

–शंभु छंद–

जितने भी पुद्गल इस जग में, सबको भोगा छोड़ा मैंने।
अब सब उच्छिष्ट सदृश मुझको, हा फिर भी ममता है इनमें।।
नभ के प्रत्येक प्रदेशों को, मैं जन्म–मरण से पूर्ण किया।
त्रिभुवन में जी भर घूम चुका, नहिं कुछ भी क्षेत्र अपूर्ण रहा।।1।।

जो हुए अनंतानंतों ही, उत्सर्पिणि–अवसर्पिणी समय।
उन सबमें जन्म–मरण करता, आया नहिं छोड़ा एक समय।।
चारों गतियों की सब आयू, भोगी है बार अनंतों मैं।
ग्रैवेयक ऊपर नहीं गया, बस इतना बचा दिया मैंने।।2।।

सब मिथ्या अविरति भावों में, क्रोधादि कषाय विभावों में।
इन दुर्भावों में रहा किन्तु, नहिं लिया अपूर्व भाव मैंने।।
इस तरह पंच परिवर्तन से, परिवर्तन करता आया हूँ।
मैं काल अनादी से अब तक, नहिं किंचित् भी सुख पाया हूँ।।3।।

अब काललब्धि को पाकर मैं, भव भ्रमणों से अकुलाया हूँ।
निज शुद्ध स्वभाव प्रगट करके, स्थिर पद पाने आया हूँ।।
हे कुंथुनाथ! मैं नमूं तुम्हें, अब दया करो भव फेर हरो।
तुम ही हो शरणागत रक्षक, अब मेरी बार न देर करो।।4।।

यह हस्तिनागपुर तीर्थ बना, प्रभु सूरसेन के घर जन्में।
श्रीकांता माता मुदित हुईं, जब गोद में खेला था तुमने।।
श्रावण वदि दशमी गर्भ तिथी, वैशाख सुदी एकम जनि[1] की।
फिर वही तिथी दीक्षा दिन की, सित चैत्र तृतीया केवल की।।5।।

इक सौ चालिस कर देह तुंग, आयू पंचानवे सहस बरस।
अज लांछन कनक वर्ण सुन्दर, तुम कामदेव चक्रेश्वर प्रभु।।
बैसाख सुदी एकम् तिथि में, सम्मेदाचल से मुक्ति वरी।
मुझ ''ज्ञानमती'' कैवल्य करो, बस यही प्रार्थना है मेरी।।6।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. जन्म।

पूजा नं. १
श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवलरवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २
श्री कुंथुनाथ तीर्थंकर पूजा

–दोहा –

परमपुरुष परमातमा, परमानन्द स्वरूप।
आह्वानन कर मैं जजूँ, कुंथुनाथ शिवभूप।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –बसंततिलका छंद –

गंगानदी जल लिये त्रय धार देऊँ।
स्वात्मैक शुद्ध करना बस एक हेतू।।
श्री कुंथुनाथ पद पंकज को जजूँ मैं।
छूटूँ अनंत भव संकट से सदा जो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर केशर घिसा कर शुद्ध लाया।
संसार ताप शमहेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली अखंड सित धौत सुथाल भरके।
अक्षय अखंड पद हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब अरविंद सुचंपकादी।
कामारिजित पद सरोरुह में चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पुआ अंदरसा पकवान नाना।
क्षुध रोग नाश हित नेवज को चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर दीप लव ज्योति करें दशोंदिक्।
मैं आरती कर प्रभो निज मोह नाशूँ।।श्री कुंथु.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू सुरभि धूप जले अगनि में।
संपूर्ण पाप कर भस्म उड़े गगन में।।श्री कुंथु.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल अमृतसम मंगाके।
अर्पूं तुम्हें सुफल हेतु अभीष्ट पूरो।।श्री कुंथु.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अष्ट शुभद्रव्य सुथाल भरके।
पूजूँ तुम्हें सकल ''ज्ञानमती'' सदा हो।।श्री कुंथु.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

कनकभृंग में नीर, सुरभित कमलपराग से।
मिले भवोदधितीर, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल गुलाब सुपुष्प, सुरभित करते दश दिशा।
पुष्पांजलि से पूज, पाऊँ आतम निधि अमल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–दोहा –

श्रावण वदि दशमी तिथी, गर्भ बसे भगवान।
इंद्र गर्भ मंगल किया, मैं पूजूँ इत आन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणकृष्णादशम्यां श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सित वैशाख की, जन्में कुंथुजिनेश।
किया इंद्र वैभव सहित, सुरगिरि पर अभिषेक।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
इन्द्र सभी मिल आयके, किया कुंथु पद सेव।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तिथि तीज में, प्रगटा केवलज्ञान।
समवसरण में कुंथुजिन, करें भव्य कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लातृतीयायां श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, तिथि निर्वाण पवित्र।
कुंथुनाथ के पदकमल, जजतें बनूँ पवित्र।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

श्री तीर्थंकर कुंथु जिन, करुणा के अवतार।
पूर्ण अर्घ्य से जजत ही, मिले सौख्य भंडार।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

दोहा

तीर्थंकर की अर्चना, भरे स्वात्म विज्ञान।
रोक शोक दुख वंचना, करके करे महान।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौपाई (15 मात्रा)

'महाशोकध्वज' आप जिनेश।
वृक्ष अशोक चिह्न परमेश।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अशोक' शोक से हीन।
आप भक्त हों शोक विहीन।।आप.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क' नाम आत्म आधार।
सब भक्तों को सुखदातार।।आप.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं कनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष की सृष्टि करंत।
'स्रष्टा' नाम सुरेन्द्र यजंत।।आप.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्रष्टानामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पद्मविष्टर' तुम नाम।
आसन स्वर्णकमल तुम स्वामि।।आप.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मेश' आप विख्यात।
लक्ष्मी के स्वामी हो नाथ।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पद्मसंभूति' जिनेश।
चरण कमल तल कमल हमेश।।आप.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मनाभि' पंकजसम नाभि।
वंदत मिटती सर्व उपाधि।।आप.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनुत्तर' तुम सम अन्य।
श्रेष्ठ नहीं प्रभु तुम ही धन्य।।आप.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मयोनि' माता का गर्भ।
पद्माकृति से तुम उत्पत्ति।।आप.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्योनि' धर्ममय जगत्।
उसकी उत्पत्ति कारण जिनप।।आप.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इत्य' आप की प्राप्ती हेतु।
भविजन तप तपते बहुभेद।।आप.।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं इत्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्तुत्य' इन्द्र मुनि आदि।
सबकी स्तुति योग्य अबाधि।।आप.।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'स्तुतीश्वर' कहे।
स्तुति के ईश्वर ही रहें।।आप.।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' स्तुति के योग्य।
आप समान न अन्य मनोज्ञ।।आप.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' इंद्रिय के ईश।
विजितेंद्रिय हो सर्व अधीश।।आप.।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितजेय' अनूप।
जीता मोह आदि अरि भूप।।आप.।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य क्रियायें सर्व।
पूर्ण किया 'कृतक्रिय' नामार्ह।।आप.।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के स्वामी आप।
अतः 'गणाधिप' हो निष्पाप।।आप.।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों में तुम ही श्रेष्ठ।
अतः जगत में हो 'गणज्येष्ठ'।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना योग्य आप ही 'गण्य'।
चौरासी लख गुण युत धन्य।।आप.।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं गण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण पवित्र आप ही 'पुण्य'।
सबको पावन करें सुपुण्य।।आप.।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गण शिवपथ में ले जाव।
'गणाग्रणी' प्रभु आप कहाव।।आप.।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रणीनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानाद्यनंत गुण की खान।
नाथ 'गुणाकर' आप महान।।आप.।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चुरासी गुण की वार्धि।
'गुणाम्भोधि' हरते भव व्याधि।।आप.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-भरतरी

नाथ! 'गुणज्ञ' कहावते, गुणमणि ज्ञाता आप।
सर्वदोष मुझ हान के, करो शीघ्र निष्पाप।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' चौरासी लख, गुणमणि के हो नाथ।
रोग शोक दुखनाश कर, गुण से करो सनाथ।।नाम.।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्व आदि गुण आदरा, 'गुणादरी' तुम नाम।
क्रोध मोह सब नाशिये, झुक झुक करूँ प्रणाम।।नाम.।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतम आदि विभावगुण, नाश किया प्रभु आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' भये, करो मुझे निष्पाप।।नाम.।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक गुण हीन हो, 'निर्गुण' कहें मुनीश।
या निश्चित ज्ञानादि गुण, धरते निर्गुण ईश।।नाम.।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यगी' पुण्यमय, पावनवाणी आप।
मुझ वाणी पावन करो, हरो सकल भव ताप।।नाम.।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगीर्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणयुत और प्रधान हो, अतः नाम 'गुण' आप।
भव्य आपको ही गुने, हरो सकल यम ताप।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शरण्य' हो जगत में, शरणागत प्रतिपाल।
सब दुख मथन करो सदा, नमूँ नमूँ नत भाल।।नाम.।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु तुम वचन, भरें पुण्य भण्डार।
आतम निधि को देय के, करें मृत्यु संहार।।नाम.।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाक्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूत' आप पावन परम, भक्तन करो पवित्र।
अंतर आत्म उपाय से, लहूँ परमपद शीघ्र।।नाम.।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वरेण्य' मुक्तीरमा, वरण किया स्वयमेव।
सबमें श्रेष्ठ तुम्हीं कहे, करो सकल दुख छेव।।नाम.।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
पुण्यसंपदा देउ मुझ, नमूँ नमूँ नत शीश।।नाम.।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगण्य' गणना नहीं, माप रहित गुण आप।
मेरे अनवधि गुण मुझे, देय हरो संताप।।नाम.।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यधी' पावना, बुद्धि आपकी शुद्ध।
मुझ मन पावन कीजिये, होय आतमा शुद्ध।।नाम.।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधीनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' सर्वगण हित किया, गुण अनंत युत आप।
सर्वगुणों से पूर्ण कर, हरो दोष दुख पाप।।नाम.।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'पुण्यकृत्' आप ही, किया पुण्य हरपाप।
सब जन मन पावन किया, हो पवित्र निष्पाप।।नाम.।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृत्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यशासन' वहाँ, तुम शासन-मत शुद्ध।
आतम अनुशासन करूँ, देवो ऐसी बुद्धि।।नाम.।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासननामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' तुम्हीं प्रभो! धर्मोद्यान विशाल।
छाया फल दे स्वर्ग शिव, हरिये ताप दयालु।।नाम.।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'गुणग्राम' हैं, मूलोत्तर गुण युक्त।
इंद्रियगांव उजाड़ के, आप हुये जग मुक्त।।नाम.।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यापुण्यनिरोधका', शुद्ध आत्म में लीन।
पुण्य पाप को रोक के, भये मुक्ति आधीन।।नाम.।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' तुम्हीं प्रभो! पाप रहित निष्पाप।
मेरे सब संकट हरो, पुण्य भरो हत पाप।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापापेतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विपापात्मा' कहे, पाप हीन अतिशुद्ध।
मेरे सब अघ क्षय करो, होऊँ सिद्ध विशुद्ध।।नाम.।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विपाप्मा' कर्म अघ, चूर किया भगवान्।
तुम भक्ती से भव्यजन, बने सकल धनवान।।नाम.।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्ममल कल्मष धोकर शुद्ध।
प्रभो! 'वीतकल्मष' तुम्हीं मुझे करो झट शुद्ध।।नाम.।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'निर्द्वंद्व' हैं, द्वंद्व-कलह से मुक्त।
सर्व परिग्रह हीन हैं, करो हमें भव मुक्त।।नाम.।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वंद्वनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-वंदों दिगंबर गुरू.....

प्रभु आप 'निर्मद' आठ विध मद रहित पूज्य महान।
तुम भक्त अतिशय स्वाभिमानी आत्म गौरववान।।
तुम नाम की अर्चा करूँ मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शांत' क्रोधादी कषायें नष्ट कर दी आप।
तुम पद कमल की भक्ति भी करती भविक मन शांत।।तुम.।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मोह' प्रभु सब मोह अरु अज्ञान से भी दूर।
तुम भक्त का चारित्र दर्शन मोह करते दूर।।तुम.।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'निरुपद्रव' उपद्रव, उपसरग से हीन।
तुम भक्त भी जड़मूल से करते उपद्रव क्षीण।।तुम.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्यचक्षु नेत्रस्पंदन रहित विख्यात।
इससे कहें मुनि 'निर्निमेष' सुपाय ज्ञानविकास।।तुम.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निराहार' न आपको है कभी कवलाहार।
तुम भक्त भी आहार विरहित होंय निर्नीहार।।तुम.।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराहारनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' प्रभो! सामायिकादि क्रियाओं से शून्य।
संसार की सब ही क्रियाओं से रहित सुखपूर्ण।।तुम.।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'निरुपप्लव' विघन बाधारहित भगवान।
तुम पाद अर्चन से सभी निर्विघ्न होते काम।।तुम.।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कलंक' कलंक-अपवादादि अघ से हीन।
संपूर्ण कर्मकलंक नाशा विश्वज्ञान प्रवीण।।
तुम नाम की अर्चा करूँ मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरस्तैना' सर्व एनस-पाप से हो दूर।
तुम भक्त भी मोहारि अघ नाशन करें बन शूर।।तुम.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनस्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्धूतआगस्' आप हैं अपराध अघ से हीन।
हे नाथ मुझ अपराध नाशो करो ज्ञान अधीन।।तुम.।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागस्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरास्रव' संपूर्ण आस्रव रोक संवररूप।
मुझ पाप आस्रव नाशिये हो शुद्ध आतमरूप।।तुम.।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'विशाल' अनुपम शांति देते नित्य।
सबसे महान-विशाल मानें नमूँ मैं धर प्रीत्य।।तुम.।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशालनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विपुलज्योति' समस्त लोकालोकव्यापक ज्ञान।
तुम ज्ञानज्योति से हनें भवि मोह ध्वांत महान्।।तुम.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अतुल' तुलनारहित जग में मुक्तिलक्ष्मीनाथ।
नहिं तोल सकते गुण तुम्हारे सर्व गण के नाथ।।तुम.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'अचिन्त्यवैभव' विभव त्रिभुवन मान्य।
मन से न सुरपति योगिगण भी सोच सकते साम्य।।तुम.।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यवैभवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'सुसंवृत' आप सम्यक पूर्ण संवर युक्त।
तुम पदकमल की भक्ति से हों भव्य आस्रव मुक्त।।तुम.।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगुप्तात्मा' आप आत्मा कर्मअरि से गुप्त।
तुम भक्त भी मन वचन कायिक गुप्ति से हों युक्त।।तुम.।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुबुध' अच्छी तरह त्रिभुवन जानते हैं आप।
मुझको निजातम तत्त्व का सुखबोध देवो आज।।तुम.।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुबुधनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुनयतत्त्ववित्' सापेक्ष नय का मर्म।
जानों तुम्हीं बतला दिया जिन अनेकांत सुधर्म।।तुम.।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्ववित्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'एकविद्य' सु एक केवलज्ञान विद्या युक्त।
मतिश्रुत अवधि मनपर्ययी चउज्ञान विद्या मुक्त।।तुम.।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाविद्य' महान् केवलज्ञान विद्याधार।
अठरा महाभाषा लघु तुम सात सौ ध्वनि कार।।
तुम नाम की अर्चा करूँ मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनि' आप त्रिभुवन चराचर को जानते प्रत्यक्ष।
मैं आपका वंदन करूँ हो स्वात्मज्ञान प्रत्यक्ष।।तुम.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परिवृढ' सब गुणों का वर्धन किया जिनराज।
तुम वन्दना से सर्व मेरे गुण प्रगट हो आज।।तुम.।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पती' प्राणीवर्ग को संसार दुख से काढ़।
रक्षा करो त्रिभुवनपती सुर नमें रुचिधर गाढ़।।तुम.।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं पतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बसंततिलका छंद

कैवल्यज्ञानमय बुद्धि धरंत 'धीश'।
मेरे सुज्ञानमय ज्योति करो मुनीश।।
हे कुंथुनाथ! तुम मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधी' स्वपर शास्त्र सुज्ञानरूपा।
भंडार आप उसके निधि है अनूपा।।हे कुंथुनाथ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य की सकल वस्तु प्रतक्ष जानो।
'साक्षी' कहें सुरपती प्रभु ज्ञान भानू।।हे कुंथुनाथ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षैक मार्ग प्रकटी करते 'विनेता'।
पादाब्ज में नित नमूँ मुझ विघ्न नाशो।।हे कुंथुनाथ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनेतृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु विनाश 'विहितांतक' नाम धारा।
मेरे समस्त दुख रोष मिटाय दीजे।।हे कुंथुनाथ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं विहितांतकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करो दुर्गती दुख से बचाते।
साधू 'पिता' कह रहे सुख के जनक हो।।हे कुंथुनाथ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं पितृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य के गुरू कहें सबके सुत्राता।
इससे 'पितामह' तुम्हें कहते गणीशा।।हे कुंथुनाथ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं पितामहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करो नित भवोदधि दुःख से ही।
'पाता' कहें सुरपती मुझको उबारो।।हे कुंथुनाथ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं पातृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पवित्र कर ली निज की तुम्हीं ने।
इससे 'पवित्र' मुझको भि पवित्र कर दो।।हे कुंथुनाथ।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्रनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य जन को सुपवित्र करते।
'पावन' कहें मुनि तुम्हें मुझ पाप नाशो।।
हे कुंथुनाथ! तुम मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं पावननामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य तप कर प्रभु आप जैसा।
होना चहें 'गति' अतः सबको शरण भी।।हे कुंथुनाथ।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं गतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्राता' समस्त जन रक्षक भी तुम्हीं हो।
पादाब्ज आश्रय लिया अतएव मैंने।।हे कुंथुनाथ।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रातृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वैद्य आप भव रोग विनाश कर्ता।
इससे 'भिषग्वर' तुम्हीं मुझ व्याधि नाशो।।हे कुंथुनाथ।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वर्य' आप जग में अतिश्रेष्ठ माने।
मुक्तीरमा तुम वरण अभिलाष धारे।।हे कुंथुनाथ।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छानुकूल सब वस्तु प्रदान करते।
इससे 'वरद' सुरग मोक्ष तुम्हीं प्रदाता।।हे कुंथुनाथ।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरदनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से 'परम' आप त्रिलोक लक्ष्मी।
धारें अतः जन सभी तुम पास आते।।हे कुंथुनाथ।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा व अन्य जन को भि पवित्र करते।
इससे 'पुमान्' तुम ही जग के हितैषी।।हे कुंथुनाथ।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुमान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'कवि' द्वादश अंग वर्णे।
सद्धर्म के कथन में अतिशायि पटुता।।हे कुंथुनाथ।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं कविनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना आदि नांत अतएव 'पुराण पुरुष'।
आत्मा पुराण पुरुषा प्रभु आपकी है।।हे कुंथुनाथ।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से अतिशयी प्रभु वृद्ध ही हो।
इस हेतु नाम तुम 'वर्षीयान्' पाया।।हे कुंथुनाथ।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुश्रेष्ठ हो 'ऋषभ' नाम धरा तुम्हीं ने।
इन्द्रादि वंद्य सुरपूजित सौख्य देवो।।हे कुंथुनाथ।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव! आप 'पुरु' हैं युग के विधाता।
संपूर्ण द्वादश गणों मधि मुख्य ही हो।।हे कुंथुनाथ।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुरुनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पत्ति है प्रतिष्ठा गुण की तुम्हीं से।
इससे तुम्हीं 'प्रतिष्ठाप्रसवादि' नामा।।हे कुंथुनाथ।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठाप्रसवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण कार्य हित कारण 'हेतु' आप।
संपूर्ण ज्ञानमय नाथ! सुज्ञानदाता।।हे कुंथुनाथ।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं हेतुनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो एकमात्र गुरू सर्व त्रिलोक में भी।
अतएव आप 'भुवनैकपितामहा' हो।।हे कुंथुनाथ।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैकपितामहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद–

तुम प्रगट प्रगट अतिशय महात्म्य।
हरि हर ब्रह्मा नहिं करें साम्य।।
जिन कुंथु निरंजन निर्विकार।
मैं नमूँ सौख्य पाऊँ अपार।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदितोदितमाहात्म्यनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सो रहे जगत् व्यवहार हीन, जगते निज में प्रभु स्वात्म लीन।
तुम इष्ट अनिष्ट विभाव दूर, पूजत ही पाऊँ स्वात्मपूर।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहारसुषुप्तनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरगुण हैं चौरासि लाख, इनसे पाया निज पूर्ण राज्य।
मिटते अनिष्ट संयोग शोक, पूजन करते जन मन अशोक।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिलक्षगुणनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सिद्धिपुरी के पथिक आप, श्री कुंथुनाथ पाया स्वराज्य।
दुख इष्ट वियोगादिक न होंय, पूजत ही निजपद प्राप्त होय।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिपुरीपान्थनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

अर्हत्प्रभु योग निरोध किया, तब समवसरण भी विघट गया।
दिव्यध्वनि खिरनी बंद हुई, वच काय योग संकोच लिया।।
कर्मारि अघाती नष्ट हुये , शिवधाम मिला प्रभु सिद्ध बने।
पूजत ही वचन सिद्धि होती, प्रभु ध्याते आत्मा शुद्ध बने।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं संहृतध्वनिगुणविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों से ईर्यापथ आस्रव, वह किट्टि लेप है अर्हत् को।
व्युपरत क्रियनिवृती शुक्लध्यान, ध्याया तब हना अघाती को।।
प्रभु योग किट्टि निर्लेपन में, उद्यत हो शिवपद प्राप्त किया।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजत ही, शुद्धात्म ज्ञान को प्राप्त किया।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगकिट्टिनिर्लेपनउद्यतनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

टूट रहे कर्मों के फंद, हुये अयोगी जिन निर्द्वंद।
सिद्धधाम में काल अनंत, निवसें जजूँ कुंथु भगवंत।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रुटत्कर्मपाशनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमनिर्जरा तत्त्व धरंत, जिन अयोगि हों सिद्ध तुरंत।
अशुभ कर्म निर्जीरण हेतु, नमूँ कुंथुप्रभु भवदधि सेतु।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमनिर्जरनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं –

प्रभु महाशोकध्वज आदि नाम, इक शतक आठ धारक प्रभु हो।
सौ इन्द्रों से वंदित गणधर, मुनिगण से वंदित संस्तुत हो।।
प्रभु सात परमस्थान हेतु, मैं नितप्रति तुम गुण को गाऊँ।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तुमपद में ही मैं रम जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजादि–अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पाजलिः।

जाप्य – ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय नमः।

(सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से 108 बार,
27 बार या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

–दोहा –

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
कुंथुनाथ तुमको नमूँ, करूँ भक्ति भर सेव।।1।।

–त्रिभंगी छंद –

पैंतिस गणधर मुनि साठ सहस, भाविता आर्यिका गणिनी थीं।
सब साठ सहस त्रय शतपचास, संयतिकायें अघ हरणी थीं।।
श्रावक दो लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चिन्ह बकरा शोभे।
आयू पंचानवे सहस वर्ष, पैंतिस धनु तनु स्वर्णिम दीपे।।2।।

–गीता छंद –

जय कुंथुनाथ जिनेंद्र तीर्थेश्वर जगत विख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के, भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते, त्रैलोक्य के चूड़ामणी।
जय जय सकल जग में तुम्हीं, हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।3।।

एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव, औ भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।4।।

बहुजन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरातमा औ अंतरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।5।।

तुम सकल परमात्मा बने, जब घातिया आहत हुए।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा, प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुए।।
फिर शेष कर्म विनाश करके, निकल परमात्मा बने।
कल–देहवर्जित निकल अकल, स्वरूप शुद्धात्मा बने।।6।।

हे नाथ! बहिरात्मा दशा को, छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूँ।।7।।

–दोहा –

कामदेव चक्रीश प्रभु, सत्रहवें तीर्थेश।
केवल ''ज्ञानमती'' मुझे, दो त्रिभुवन परमेश।।8।।

सूरसेन नृप के तनय, श्रीकांता के लाल।
जजें तुम्हें जो वे स्वयं, होते मालामाल।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्री कुंथुनाथ जिनवर विधान, जो भक्ति भाव से करते हैं।
संपूर्ण रोग दुःख संकट हर, नर सुर के सुख को लभते हैं।।
रत्नत्रय निधि को पा करके, मन पंकज विकसित करते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, तिहुंलोक प्रकाशित करते हैं।।1।।

इत्याशीर्वादः।

प्रशस्ति

–शंभु छंद –

चौबीस तीर्थंकर को वंदूँ, माँ सरस्वती को नमन करूँ।
गणधर गुरु के सब साधू के, श्री चरणों में नित शीश धरूँ।।
इस युग में कुंदकुंदसूरी, का अन्वय जगत् प्रसिद्ध हुआ।
इसमें सरस्वती गच्छ बलात्कारगण अतिशायि समृद्ध हुआ।।1।।

इस परम्परा में साधु मार्ग, उद्धारक दिग्अंबर धारी।
आचार्य शांतिसागर चारित्र-चक्रवर्ती पद के धारी।।
इन गुरु के पट्टाधीश हुए, आचार्य वीरसागर गुरुवर।
इनकी मैं शिष्या गणिनी-ज्ञानमती आर्यिका प्रथित भू पर।।2।।

मैंने जिनवर की भक्तीवश, बहुतेक विधान रचें सुंदर।
इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र पूजा मनहर।।
श्री जम्बूद्वीप व तीनलोक, आदिक विधान जगमान्य हुए।
भक्तीप्रधान इस युग में तो, भक्तों को अतिशय मान्य हुए।।3।।

श्री कुंथुनाथ तीर्थंकर की यह विधान रचना की मैंने।
जिनवर भक्ती ही है निमित्त, यह भक्ती सदा फले मुझ में।।
श्री कुंथुनाथ जिनवर विधान, भव्यों को अतिशय प्रिय होवे।
जब तक जिनधर्म रहे जग में, तब तक भक्तों का अघ धोवे।।4।।

–दोहा –

शांति कुंथु अरनाथ के, चार चार कल्याण।
हस्तिनागपुर में हुये, शत शत करूँ प्रणाम।।5।।

।।इति श्रीकुंथुनाथविधानं संपूर्णम्।।

जैनं जयतु शासनम्।

पूजा नं. ३

श्री कुंथुनाथ जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

स्थापना –गीता छंद

श्री शांति कुंथू अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मनभावन किया।।
निज ज्ञान ज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–चामर छंद –

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।हस्तिनागपुर.।।2।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।हस्तिनागपुर.।।3।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण-वर्ण के लिए।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिए।।हस्तिनागपुर.।।4।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महा व्यथा हने।।हस्तिनागपुर.।।5।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।हस्तिनागपुर.।।6।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्निपात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।हस्तिनागपुर.।।7।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेव संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।हस्तिनागपुर.।।8।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को बनाइये।
मुक्ति अंगना निमित्त तीर्थ को चढ़ाइये।।हस्तिनागपुर.।।9।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
तीरथ पर धारा करूँ, तिहुँ जग शांती हेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प से, पुष्पांजली करंत।
पावन तीर्थ महान यह, करे भवोदधि अंत।।1।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अर-तीर्थंकर-गर्भजन्मतपो-ज्ञानकल्याणक-पवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय नमः।

जयमाला

–दोहा –

समवसरण में राजते, ज्ञानज्योति से पूर्ण।
शांति-कुंथु-अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।1।।

–शंभु छंद –

श्री आदिनाथ को सर्वप्रथम, इक्षूरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति ने, यहाँ तभी से, दान तीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।2।।
श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी देवों के संग, सौधर्म इंद्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव-भव के पाप नशाये थे।।3।।
आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन-जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।4।।
गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।5।।
राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ इक सौ इक फुट, उत्तुंग सुमेरू बना अहो।।

यह जंबूद्वीप बना सुंदर, इसमें अठहत्तर जिनमंदिर।
इक सौ तेइस हैं देवभवन, उसमें भी जिनप्रतिमा मनहर।।6।।
जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुङ्ग सुमेरू पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।7।।
श्री आदिनाथ, भरतेश और, बाहूबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ती निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित हैं।।8।।
श्री शांतिनाथ मंदिर-वृषभेश्वर मंदिर-वासुपूज्य मंदिर।
है तेरहद्वीप जिनालय एवं बना ''ॐ'' मंदिर सुन्दर।।
ग्रह की बाधा हरने वाला, नवग्रहशांती जिनमंदिर है।
इक सहस्र आठ प्रतिमाओं से युत, सहस्रकूट जिनमंदिर है।।9।।
है विद्यमान विंशति प्रतिमाओं से संयुत मंदिर सुन्दर।
आदी तीर्थंकर ऋषभदेव का, कीर्तिस्तंभ बना मनहर।।
श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू की, बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ हैं।
फिर तीनलोक रचना के जिनबिम्बों को शीश झुकाऊँ मैं।।10।।
जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।11।।

ॐ ह्रीं श्री शांति-कुंथु-अर-तीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।।

–दोहा –

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
'ज्ञानमती' संपत्ति दे, भरे आत्मसुख कोष।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भगवान श्री कुंथुनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–क्या खूब दिखती हो.....

श्री कुंथुनाथ प्रभु की, हम आरति करते हैं,
आरति करके जनम-जनम के पाप विनशते हैं,
सांसारिक सुख के संग आत्मिक सुख भी मिलते हैं,
श्री कुंथुनाथ प्रभु की, हम आरति करते हैं।।टेक.।।

जब गर्भ में प्रभु तुम आए-हां आए,
पितु सूरसेन श्रीकांता माँ हरषाए।
सुर वन्दन करने आए-हां आए,
श्रावण वदि दशमी गर्भकल्याण मनाएं।
हस्तिनापुरी की उस पावन, धरती को नमते हैं,
आरति करके .....।।1।।

वैशाख सुदी एकम में-एकम में,
जन्मे जब सुरगृह में बाजे बजते थे।
सुरशैल शिखर ले जाकर-ले जाकर,
सब इन्द्र सपरिकर करें न्हवन जिनशिशु पर।
जन्मकल्याणक से पावन, उस गिरि को जजते हैं,
आरति करके .....।।2।।

फिर बारह भावना भाई-हां भाई,
वैशाख सुदी एकम दीक्षा तिथि आई।
लौकान्तिक सुरगण आए-हां आए,
वैराग्य प्रशंसा द्वारा प्रभु गुण गाएं।
उन मनपर्ययज्ञानी मुनि को, शत-शत नमते हैं,
आरति करके .....।।3।।

फिर केवलरवि था प्रगटा-हां प्रगटा,
प्रभु समवसरण रच गया अलौकिक जो था।
दिव्यध्वनि पान करे जो-हां करे जो,
भववारिधि से तिर निज कल्याण करे वो।
चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर को नमते हैं,
आरति करके .....।।4।।

वैशाख सुदी एकम तिथि-एकम तिथि,
मुक्तिश्री नामा इक प्रियतमा वरी थी।
सम्मेदशिखर गिरि पावन-हां पावन,
प्रभुवर ने पाया मोक्षधाम मनभावन।।
उसी धाम की चाह ''चंदनामति'', हम करते हैं।
आरति करके .....।।5।।

हस्तिनापुर तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–माई रे माई.....

हस्तिनागपुर तीरथ की हम, आरति करने आए।
आरति करते तीरथ की, निज अन्तर्मन खिल जाए।।
बोलो जय जय जय-2, प्रभू की जय, जय, जय।।टेक.।।

है इतिहास प्रसिद्ध तीर्थ यह, अतिप्राचीन सुपावन।
इस भूमी का वन्दन कर लो, अद्भुत है मनभावन।।
देवों द्वारा रची गई.....
देवों द्वारा रची गई, नगरी की महिमा गाएं।आरति.....।।1।।

वर्तमान के तीन तीर्थंकर, इसी धरा पर जन्में।
चक्रवर्ति अरु कामदेव तीनों पदवी से युत थे।।
तीन बार आ धनदराज ने.....
तीन बार आ धनदराज ने, रत्न बहुत बरसाए।।आरति.....।।2।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की, प्रथम पारणा भूमी।
दानतीर्थ का हुआ प्रवर्तन, धन्य हुई यह भूमी।।
अक्षय तृतिया पर्व आज भी.....
अक्षय तृतिया पर्व आज भी, वह इतिहास बताए।।आरति.....।।3।।

रक्षाबन्धन पर्व, महाभारत, की जुड़ी कहानी।
मनोवती की दर्श प्रतिज्ञा, शुरू यहीं से मानी।।
सति सुलोचना, रोहिणि रानी.....
सति सुलोचना, रोहिणि रानी, की विख्यात कथाएं।।आरति.....।।4।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी, नई चेतना लाईं।
स्वर्ग सरीखे जम्बूद्वीप से, विश्वप्रसिद्धि कराई।।
करे ''चन्दनामती'' वंदना.....
करे ''चन्दनामती'' वंदना, ज्ञान ज्योति जग जाए।।आरति.....।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-देख तेरे संसार.....

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनी है आलीशान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।टेक.।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में।
पर्वत के पाषाण खण्ड में।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता की प्रेरणा महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।1।।
ऋषभदेव प्रतिमा प्रगटी है।
गुरुमाता की तपशक्ती है।।
उनका गौरवमय ससंघ सानिध्य मिला है महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।2।।
इक सौ अठ फुट की यह प्रतिमा।
जिनशासन की अद्भुत गरिमा।।
यह आश्चर्य प्रथम है जग में जैनधरम की शान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।3।।
यह है आयडल ऑफ अहिंसा।
भारत की पहचान अहिंसा।।
इसे ''चन्दनामती'' हृदय से कर लो सभी प्रणाम,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।4।।
श्री रवीन्द्रकीर्ति का समर्पण।
भक्तों का अर्थाञ्जलि अर्पण।।
अमर रहेगा युग युग तक सबका तन मन धन दान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–सारे जग का तू सरताज .....

सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा, सारे जग में तेरी धूम-बाबा हो बाबा।
सबसे ऊँची तेरी प्रतिमा, मांगीतुंगी तीर्थ की महिमा,
बढ़ गई ज्ञानमती की गरिमा।।सारे.।।
तीर्थंकर प्रथम इस धरा के हो तुम।
कर्मयुग के प्रभो आदिब्रह्मा हो तुम।।
तुमने मोक्षमार्ग बतलाया, जग को जीवनकला सिखाया,
आदिब्रह्मा तू कहलाया।।सारे.।।1।।
मांगीतुंगी में प्रतिमा तेरी बन गई।
ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिल गई।।
दुनिया भर में सबसे ऊँची, मूरति देखो बनी अनूठी,
इनसे सुन्दर छवी न दूजी।।सारे.।।2।।
बड़ी प्रतिमा की सब ओर जयकार है।
नाभिनन्दन को मेरा नमस्कार है।।
बढ़ गई जिनशासन की कीरत, धन्य है मांगीतुंगी तीरथ,
बन गई तेरी सुंदर मूरत।।सारे.।।3।।
युग युगों तक अमर जैनशासन हुआ।
'चन्दनामति' अमर जैन आगम हुआ।।
आगम का प्रमाण दरशाया, मूर्ति सांगोपांग बनाया,
जैनीध्वज नभ में लहराया।।सारे.।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

नाम तिहारा तारनहारा कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।। टेक.।।
जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।1।।
पृथ्वी के सुन्दर परमाणू, सब तुझमें ही समा गए।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गए।।
इसीलिए तुझ सम सुन्दर नहिं, कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।2।।
मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज ''चंदनामती'' प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।